International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-08-2020; Accepted: 25-08-2020; Published: 11-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 16-17

प्रामाणिक वैष्णव-भक्ति संप्रदाय

दीपक कुमार गुप्ता
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम, भारत

प्रस्तावना

भक्ति की व्याख्या और उसके साधनों की स्थिति पर अगर विचार किया जाए तो भक्ति के विभिन्न संप्रदायों के विकास पर ध्यान देना स्वाभाविक है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक इन्हीं संप्रदायों तथा इसके अनुयायियों की ही देख-रेख में भक्ति का प्रचार-प्रसार होता आ रहा है। इन संप्रदायों में दीक्षित भक्त ही 'भक्ति' को सामान्य जीवन के लिए सुलभ बनाते हैं। ये आचार्य एक खास गुरु परंपरा में दीक्षित होकर अपने नियमों तथा मतवादों का प्रचार-प्रसार करते आ रहे हैं। 'वेद', 'पद्म-पुराण', 'गर्ग-संहिता', श्रीमदभागवतम्', 'चैतन्य-चरितामृत', 'गीता' आदि में इसका स्पष्ट उल्लेख देखने को मिलता है।

'श्री गर्ग-संहिता' में तथा 'पद्म-पुराण' में इन संप्रदायों का भक्ति-जीवन में बड़ा महत्व बताया गया है। 'गर्ग-संहिता' के अनुसार इन के नाम हैं,- ब्रह्म संप्रदाय, रुद्र संप्रदाय, श्री संप्रदाय तथा कुमार संप्रदाय । 'श्रीमदभागवतम्' के षष्ठ स्कंध(6.3.20-21) में एक स्थान पर उल्लेख है,-

"शिष्य परंपराएँ चार हैं- एक ब्रह्मा से, एक शिव से, एक लक्ष्मी से तथा एक कुमारों से चलने वाली। ब्रह्मा से चलनेवाली शिष्य-परंपरा ब्रह्म संप्रदाय कहलाती है, शिव (शंभू) से चलनेवाली परंपरा रूद्र संप्रदाय तथा देवी लक्ष्मी से चलनेवाली परंपरा श्रीसंप्रदाय तथा कुमारों से चलनेवाली कुमार संप्रदाय कहलाती है।"1

'गर्ग-संहिता'(10.61.23-26) में इसी बात की पुष्टि मिलती है तथा इसका उल्लेख 'श्रीमद्भागवतम' में भी अनेकों बार हुआ है। यथा,-

"संप्रदायविहीना ये मंत्रास्ते निष्फला मताः"2

अर्थात्, यदि कोई व्यक्ति अथवा भक्त इन सभी मान्यता प्राप्त चार संप्रदायों- ब्रह्म, रुद्र, श्री तथा कुमार संप्रदाय की शिष्य परंपरा का पालन न कर अन्यत्र से ग्रहण करता है तथा वह मंत्र जपता है या दीक्षा ग्रहण आदि करता है तो उसका मंत्र या दीक्षा सब निष्फला होती है। उसका उसे कोई भी फल लाभ नहीं होता।

अतः भक्ति के ये चार संप्रदाय ही वैष्णव संप्रदाय के प्रामाणिक संप्रदाय हैं एवं इन्हीं संप्रदायों में चलनेवाली शिष्य परंपरा में दीक्षित भक्तों ने इसे अनेक कालों से वर्तमान समय तक गतिशील रखा है तथा इन आचार्यों के मतों का निरंतर प्रचार-प्रसार किया है। आज के इस वर्तमान युग में देखें तो अनेकों संप्रदाय तथा उप-संप्रदाय आ चुके हैं, जिन्होंने अपनी अलग ही विचारधारा तथा भक्ति पद्धति से समाज को एक अलग ही दिशा में प्रवाहित कर उन्हें भटकाकर अपने स्वार्थ सिद्धि का ही प्रयास किया है।

गौरतलब है कि भक्ति काल में भी ये चार संप्रदाय प्रमुख संप्रदाय के रूप में प्रचलित थे। कालांतर में इसके कई उप-संप्रदाय हमारे सामने आ गए। 'गर्ग-संहिता' में ही हमें इन संप्रदायों के प्रमुख प्रामाणिक आचार्यों का उल्लेख मिल जाता है। यथा,-

"विष्णु स्वामी वामनामजस्तथा माधवास्तु ब्राह्मणः।
रामार्जुनस्तु जेस्मज निंबादित्य सनकास्यच॥
इते कलौयुगे भव्यह संप्रदाय प्रवर्तकः।
संवत्सरे विक्रमाचत्वरः क्षिति पावनः॥"3

अर्थात्- 'विष्णु स्वामी माध्वाचार्य, रामानुजाचार्य तथा निंबादित्य, सनक संप्रदाय में चार प्रामाणिक गुरू पृथ्वी पर कलियुग में राजा विक्रमादित्य के काल में भक्ति की रक्षा तथा प्रचार करेंगे।'

डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में सगुण भक्ति काव्य पर विचार करते हुए पृष्ठ संख्या 176 में इसका स्पष्ट उल्लेख हमें देखने को मिलता है। यथा,-

"वैष्णव धर्म के प्रवर्तक श्री ब्रह्म, रूद्र, सनकादि संप्रदायों के अनुयायी आचार्यों ने भागवत पुराण पर टीका, भाष्य, टिप्पणी, वृत्ति आदि लिखकर अपनी पुराण-निष्ठा का परिचय दिया।"4

अतः श्री ब्रह्म, रूद्र तथा सनकादि संप्रदाय का प्रभाव वैष्णव भक्ति में अन्यतम है। इन्हीं प्रामाणिक संप्रदायों से वैष्णव भक्ति का प्रचार-प्रसार होता आ रहा है तथा भारत के अतिरिक्त आज लगभग पूरे विश्व में फ़ैल चुका है। आज का समाज भक्ति की इस प्रामाणिक परंपरा से अनभिज्ञ हो गया है तथा किसी भी संप्रदाय विहीन, स्वार्थसिद्ध गुरु या भक्त कहलाने वाले लोगों के अपने मतवाद या विचारधारा से प्रभावित होकर भक्ति कर रहा है। अतः भक्ति के प्रामाणिक गुरु परंपरा का ज्ञान समाज को शुद्ध भक्ति की प्राप्ति का मार्ग बताता है तथा भागवत भक्ति की सच्ची अनुभूति कराकर उसका उद्धार करता है। इस प्रकार से इन चारों संप्रदायों का तथा इसके आचार्यों के विषय में जानना आवश्यक है। नीचे इन चारों भक्ति-संप्रदायों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है,-

पौराणिक काल से यह प्रमाणित है तथा विभिन्न शास्त्रों तथा प्रामाणिक ग्रंथों में भी यह उल्लेख है कि भगवान कृष्ण या विष्णु की उपासना पद्धति में चार प्रमुख आचार्य अथवा प्रतिष्ठाता आते हैं जिनके नाम- ब्रह्मा, श्रीलक्ष्मी, शिव तथा चार कुमार आते हैं। इन्हीं चारों यथा,- ब्रह्मा से ब्रह्म संप्रदाय का उद्भव होता है जिनके प्रामाणिक आचार्य माध्वाचार्य होते हैं, जिनसे ब्रह्म संप्रदाय का विकास होता है। श्रीलक्ष्मी से श्रीसंप्रदाय का विकास होता है जिनके प्रामाणिक आचार्य रामानुजाचार्य बनते हैं, जिनसे श्रीसंप्रदाय का विकास होता है। शिव से रूद्र संप्रदाय का विकास होता है जिनके प्रामाणिक आचार्य विष्णुस्वामी होते हैं तथा इन्हीं विष्णुस्वामी से रूद्र संप्रदाय का उद्भव तथा विकास होता है। इसके अलावा चौथा संप्रदाय कुमार संप्रदाय है जिनके प्रामाणिक आचार्य निम्बार्काचार्य होते हैं तथा इन्हीं से कुमार संप्रदाय का विकास होता है। इन चारों संप्रदायों का प्रधान उद्देश्य वैष्णव भक्ति का प्रचार-प्रसार करना तथा भगवान विष्णु अथवा राम-कृष्ण की पूजा पद्धति को जनमानस के लिए परंपरागत सर्वसुलभ बना कर हरि नाम का प्रचार संपूर्ण पृथ्वी पर करना। इनका क्रमानुसार वर्णन इस प्रकार है,-

1. ब्रह्म संप्रदाय :- ब्रह्मा से जिस संप्रदाय का उद्भव हुआ उसका नाम ब्रह्म संप्रदाय है। ब्रह्मा से नारद को दीक्षा मिली। नारद ने आगे चलकर प्रह्लाद महाराज, ध्रुव महाराज, व्यासदेव आदि अनेक भगवद् भक्तों को दीक्षा दी। व्यासदेव से मध्वाचार्य को दीक्षा मिली। इस संप्रदाय के प्रामाणिक आचार्य मध्वाचार्य भी हुए। इन्होंने अद्वैतवाद का विरोध कर द्वैतवाद की स्थापना की थी। डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में सगुण भक्ति काव्य पृष्ठ सं 177 में कहा गया है,-

"मध्वाचार्य ने अद्वैतवाद का घोर विरोध किया। इनका दार्शनिक मत द्वैतवाद है। इनके मत में भगवान विष्णु आठ गुणों से उपेत और सर्वोच्च तत्व है।...अपने

वास्तविक सुख की अनुभूति ही मुक्ति है। मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन अमला भक्ति है। वेद का समस्त तात्पर्य विष्णु ही है। मध्वाचार्य का संप्रदाय ब्रह्म-संप्रदाय के नाम से विख्यात है।"5

मध्वाचार्य से ही चैतन्य महाप्रभू ने गुरु शिष्य-परंपरा स्वीकार की थी। आज संपूर्ण भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में ब्रह्म-माध्व गौड़ीय संप्रदाय के एक प्रामाणिक शिष्य परंपरा का विस्तार एवं प्रभाव फैलता जा रहा है।

2. श्री-संप्रदाय :- श्री रामानुजाचार्य से इस संप्रदाय का प्रारंभ होता है जिन्होंने राम-भक्ति को मानव समाज में स्थापित किया था। 'हिंदी साहित्य के इतिहास' के 'सगुण भक्ति काव्य' अध्याय में एक स्थान पर लिखा गया है,-

"आचार्य रामानुज ने अवतारी राम को अपनी विष्णु-भक्ति का उपास्य देव स्वीकार कर विशिष्टाद्वैत-सिद्धांत की स्थापना की। उनके मत में पुरुषोत्तम ब्रह्म सगुण और सविशेष है। भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए वे पाँच रूप धारण करते हैं। इन्हीं में अर्चावतार राम की गणना होती है। भक्ति ही मुक्ति का साधन है।"6

इस प्रकार यहाँ भी रामानुजाचार्य की भक्ति में राम को उपास्य देव मानकर उनके सगुण रूप की भक्ति को मुक्ति का साधन घोषित करती है जो आगे चलकर रामानंद तथा तुलसीदास पर प्रभाव डालती है। इसके आगे वे फिर लिखते हैं,-

"दार्शनिक स्तर पर यह सिद्धांत 'विशिष्टाद्वैत' कहलाता है और इस संप्रदाय को 'श्री-संप्रदाय' कहते हैं। इस संप्रदाय का प्रबल प्रभाव रामानंद स्वामी पर देखा जा सकता है। हिंदी के वैष्णव कवियों में गोस्वामी तुलसीदास भी इससे अत्यधिक प्रभावित हैं।"7

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा में पृष्ठ संख्या 78 में एक स्थान पर तुलसीदास जी की भक्ति पद्धति पर विशिष्टाद्वैत सिद्धांत का प्रभाव कुछ इन शब्दों में निरूपित किया है,-

"तुलसी ने अपनी उपासना के अनुकूल विशिष्टाद्वैत सिद्धांत का आभास भी यह कहकर दिया है-

सियाराममय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी॥

जगत को केवल राममय न कहकर उन्होंने सियाराममय कहा है। सीता प्रकृति स्वरूपा है और राम ब्रह्म हैं; प्रकृति अचित् पक्ष है अर ब्रह्म चित् पक्ष।"8

अतः गोस्वामी तुलसीदास पर 'श्रीसंप्रदाय' का तथा 'विशिष्टाद्वैत-सिद्धांत' का प्रबल प्रभाव रहा है।

3. निंबार्क संप्रदाय अथवा कुमार संप्रदाय :- चतुष्कुमार को ब्रह्मा का पुत्र कहा गया है। 'श्रीमदभागवतम्' के चतुर्थ स्कन्ध, भाग-2 (4.2.22.4) में इन कुमारों का उल्लेख मिलता है। महाराज पृथु के शासन काल में उन्होंने इन चार कुमारों के आगमन पर वही सेवा की थी। यथा,-

गौरवाद्यंश्रितः सभ्यः प्रश्रयानतकंधरः।
विधिवत्पूजयां चक्रे गृहीताध्यर्हणासनान्॥4॥ 9

अर्थात्- "जब वे महान् ऋषिगण शास्त्रविहित ढंग से उनके द्वारा किये गये स्वागत को स्वीकार कर राजा द्वारा प्रदत्त आसनों पर बैठ गये तो राजा उनके गौरव के वशीभूत होकर तुरंत नतमस्तक हुआ। इस प्रकार उसने चारों कुमारों की पूजा की।"

इन्हीं चारों कुमारों द्वारा प्रतिपादित संप्रदाय कुमार-संप्रदाय के नाम से विख्यात है जिनके गुरु शिष्य परंपरा में निम्बार्क हुए जिनके नाम से इस संप्रदाय को निम्बार्क-संप्रदाय भी कहा जाता है। डॉ. नगेंद्र के इतिहास के 'सगुण भक्तिकाव्य' खंड में पृष्ठ संख्या 178 में उल्लेख है,-

"श्री निम्बार्क का संप्रदाय सनकादि संप्रदाय के अंतर्गत है। इस संप्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत 'भेदा-भेदवाद' या 'द्वैताद्वैतवाद' है। जीव अवस्था-भेद से ब्रह्म के साथ भिन्न भी है तथा अभिन्न भी है। जीव ब्रह्म का अंश है, ब्रह्म अंशी है। जीव अणु, अल्पज्ञ है। भक्ति ही मुक्ति का साधन है। विष्णु के अवतार रूप कृष्ण ही उपास्य हैं। राधा-कृष्ण की युगलोपासना का विधान इस संप्रदाय में है। ब्रजमंडल में इसका प्रचार है और इसके अंतर्गत श्री कृष्ण की अनेक लीलाओं के द्वारा भक्ति-भाव की अभिव्यक्ति की जाती है। निम्बार्क संप्रदाय के अनेक कवियों ने ब्रजभाषा में सुंदर पद रचना की है। स्वामी हरिदास का सखी-संप्रदाय इसी की शाखा है।"10

4. रूद्र संप्रदाय :- भगवान शिव से विकसित इस संप्रदाय को रूद्र-संप्रदाय के नाम से जाना जाता है। इस संप्रदाय के आचार्य श्री विष्णुस्वामी हैं। नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में सगुण भक्ति काव्य के पृष्ठ सं 170 में इसके संबंध में कहा गया है,-

"विष्णुस्वामी (1300) के मत में ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप हैं तथा वे अपनी आह्लादिनी शक्ति के द्वारा अश्लिष्ट है। माया उन्हीं के अधीन रहती है। इनके मत में ईश्वर का प्रधान अवतार नृसिंह है। कुछ विद्वान नृसिंह और गोपाल दोनों का इन्हें उपासक मानते हैं।इस संप्रदाय के दार्शनिक सिद्धांत ग्रंथ-रूप में उपलब्ध नहीं है। इनकी शिष्य-परंपरा में वल्लभाचार्य का स्थान है और उन्हीं के सिद्धांतों को विष्णुस्वामी संप्रदाय में स्थान दिया जाता है।" 11

निष्कर्ष :- अतः कहा जा सकता है कि वैष्णव भक्ति के मूलरूप से चार प्रामाणिक संप्रदाय प्रचलित हैं। इन संप्रदायों में कुछ उप-संप्रदायों का भी सम्मिलन देखा गया है, जैसे वल्लभ संप्रदाय, सखी संप्रदाय, रामानंदी संप्रदाय इत्यादि। परंतु ध्यानपूर्वक विचार करने से यह स्पष्ट पता चलता है कि ये सारे उप-संप्रदाय इन्हीं चार मूल संप्रदाय के अंतर्गत आते हैं।

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि इन्हीं चार संप्रदायों से भक्ति की धारा का विकास हुआ है। ये चार संप्रदाय ही वास्तव में पूर्ण रूप से प्रामाणिक संप्रदाय हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रभुपाद, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद ए. सी. भक्तिवेदांत, श्रीमदभागवतम, षष्ट स्कन्ध, मुंबई, भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, पंद्रहवाँ मुद्रण, 2015, मुद्रित, पृ. 147-148.
2. प्रभुपाद, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद ए. सी. भक्तिवेदांत, वैदिक शास्त्रों से चुने हुए श्लोक, मुंबई, भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्करण, 2014, मुद्रित, पृ. 347
3. <http://www.veda.harekrsna.cz/encyclopedia/parampara1.htm >
4. नगेंद्र, डॉ, (सम्पा.), दिल्ली, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, उन्तीसवां संस्करण, 2003, मुद्रित, पृ. 176.
5. वही, पृ. 177.
6. वही, पृ. 177.
7. वही, पृ. 177.
8. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, पंचम संस्करण, संवत 2067, मुद्रित, पृ. 78.
9. प्रभुपाद, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद ए. सी. भक्तिवेदांत, श्रीमदभागवतम, चतुर्थ स्कन्ध- भाग-2, मुंबई, भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, पंद्रहवाँ मुद्रण, 2015,मुद्रित, पृ. 125.
10. नगेंद्र, डॉ, (सम्पा.), दिल्ली, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, उन्तीसवां संस्करण, 2003, मुद्रित, पृ. 178.
11. वही, पृ. 170.